हिमाचल का लाल बना

कारगिल का 'शेर'



जन्म : 9 सितंबर 1974
मृत्यु : 7 जुलाई 1999

तारीख 1 जून 1999, जब लेफ्टिनेंट विक्रम बत्रा को उनकी टुकड़ी के साथ कारगिल युद्ध में भेजा गया। वहां विक्रम बत्रा ने न केवल अपने अदम्य साहस और वीरता का परिचय दिया बल्कि बेहद दुर्गम क्षेत्र होने के बावजूद अपने साथियों के साथ 20 जून 1999 को सुबह तीन बजकर 30 मिनट पर श्रीनगर-लेह मार्ग के ठीक सबसे ऊपर 5140 चोटी को पाकिस्तानी सेना के कब्जे से मुक्त करा लिया। विक्रम बत्रा ने जब इस चोटी से रेडियो के जरिए अपना विजय घोष 'यह दिल मांगे मोर' कहा, तो सेना ही नहीं बल्कि पूरे भारत में उनका नाम छा गया। युद्ध के मैदान में ही उन्हें कैप्टन की रैंक दी गई। कारगिल के पांच सबसे महत्वपूर्ण चोटी जीतने में मुख्य भूमिका निभाने वाले विक्रम बत्रा 7 जुलाई 1999 को शहीद हो गए लेकिन दुनिया को दिखा दिया कि भारतीय जवान भारत माता की रक्षा के लिए मर मिटने से पीछे नहीं हटते...

पाकिस्तानी सेना से 5140 चोटी कब्जे में लेने के बाद 7 जुलाई 1999 को कैप्टन विक्रम बत्रा को अगला लक्ष्य दिया गया प्वाइंट 4875 को जीतने का। उस समय उनकी तबियत खराब थी। उनके सीने में दर्द था और आंख सुर्ख लाल हो चुकी थीं। उनके अधिकारी उन्हें ऊपर भेजने में झिझक रहे थे लेकिन बत्रा ने ही खुद जोर दे कर कहा कि वो इस काम को पूरा करेंगे। दुश्मनों से इस चोटी को मुक्त कराने के लिए विक्रम बत्रा ने अपनी जान की परवाह नहीं की और अपनी आखिरी सांस तक लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। विक्रम बत्रा, कारगिल युद्ध के उस सिपाही का एक चेहरा बन गए थे जो अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए सीमा पर गए और शहीद हो गए। 16 जून को कैप्टन ने अपने जुड़वां भाई विशाल को द्रास सेक्टर से चिट्ठी में लिखा था - 'प्रिय कुश, मां और पिताजी का ख्याल रखना। यहां कुछ भी हो सकता है।'

दरअसल, पाकिस्तान ने जब धोखे से 1999 में कारगिल की कई चोटियों पर कब्जा कर लिया, तब भारतीय सेना ने उन चोटियों को कब्जा मुक्त कराने के लिए ऑपरेशन विजय शुरू किया था। इस युद्ध में 24 साल के युवक कैप्टन विक्रम बत्रा ने सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। कारगिल युद्ध के दौरान शहीद होने से पहले विक्रम बत्रा ने कई पाकिस्तानी सैनिकों को मौत के घाट उतारा था और अपने बहुत से साथियों को बचाया था। उनकी इस बहादुरी के लिए भारत सरकार ने कैप्टन विक्रम बत्रा को मरणोपरांत सर्वोच्च और सबसे प्रतिष्ठित पुरस्कार परमवीर चक्र से सम्मानित किया था।

हिमाचल प्रदेश के पालमपुर में 9 सितंबर 1974 को जन्मे विक्रम बत्रा को बचपन से फौजी बनने का जुनून सा था। भारतीय सेना में जाने का जज्बा विक्रम में 1985 में दूरदर्शन पर प्रसारित एक सीरियल 'परमवीर चक्र' देख कर पैदा हुआ था। यही कारण है कि मर्चेंट नेवी में हांगकांग की एक शिपिंग कंपनी में चयन होने के बावजूद विक्रम ने सेना के करियर को ही प्राथमिकता दी। फौज में भर्ती होने पर विक्रम को उसके एक दोस्त ने जब कहा, 'अब तुम फौज में हो। अपना ध्यान रखना...' तो उन्होंने जवाब दिया, 'चिंता मत करो। या तो मैं जीत के बाद तिरंगा लहरा कर आऊंगा या फिर उसी तिरंगे में लिपट कर आऊंगा। लेकिन आऊंगा जरूर।' विक्रम बत्रा के शौर्य और पराक्रम का ही प्रभाव था कि उनके बारे में खुद तत्कालीन भारतीय सेना प्रमुख ने एक बार कहा था कि 'अगर वो जिंदा वापस आते, तो वह भारतीय सेना के प्रमुख बन गए होते।' विक्रम बत्रा के हौसले और कद-काठी को देखते हुए उन्हें कारगिल के युद्ध के दौरान कोड नाम 'शेरशाह' दिया गया था और पाकिस्तान में आज भी लोग उन्हें इसी नाम से जानते हैं। 'कारगिल के शेर' के नाम से भी जाने जाने वाले विक्रम बत्रा की शहादत के बाद प्वाइंट 4875 चोटी को बत्रा टॉप का नाम दिया गया है।●

दोस्त से कहा था- मैं जीत के बाद तिरंगा लहरा कर आऊंगा या फिर उसी तिरंगे में लिपट कर आऊंगा। लेकिन आऊंगा जरूर।